M.Ed 2nd semester

PaperCC5- Educational Studies and System

Unit 1 - Theoretical Perspectives of Education as a Discipline

By - Dr Ramendra Kumar Gupta ,Associate professor, Department of Education

N A S College Meerut

Today we will discuss on critical analysis of education as a discipline and area of study

अर्थात आज हम शिक्षा एक विषय के रूप में है का समीक्षात्मक विश्लेषण करेंगे और शिक्षा शास्त्र के क्षेत्र अध्ययन क्षेत्र एवं विषय वस्तु की भी विवेचना करेंगे ।

प्रायःलोग शिक्षा प्रक्रिया और शिक्षा शास्त्र विषय दोनों के लिए शिक्षा शब्द का प्रयोग करते हैं जबकि यह दोनों भिन्न संप्रत्यय हैं इनके अंतर को समझने के लिए हमें इन दोनों संप्रदायों को अलग-अलग समझना होगा ।

Concept of Education

शिक्षा का संप्रत्यय

शिक्षा को सामान्यतः ज्ञान एवं कौशल के रूप में देखा समझा जाता है परंतु वास्तव में यह एक प्रक्रिया है ज्ञान एवं कौशल तो इस प्रक्रिया के परिणाम है। विद्वानों ने इस प्रक्रिया की व्याख्या भिन्न-भिन्न रूपों में की है और इसे परिभाषित भी भिन्न-भिन्न रूपों में किया है। शिक्षा की उन सब व्याख्याताओं और परिभाषाओं और आज शिक्षा का जो वास्तविक स्वरूप एवं कार्य है उत्सव के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि - शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली वह सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है । इसके द्वारा व्यष्टि एवं समाज दोनों निरंतर विकास करते हैं।

Concept of Education as a Discipline

शिक्षा शास्त्र का संप्रत्यय आधुनिक युग में शिक्षा प्रक्रिया के स्वरूप एवं कार्यों की विस्तृत व्याख्या करने एवं उसकी समस्याओं के समाधान खोजने का नया प्रयत्न शुरू हुआ और यह सब कार्य मुख्य रूप से दर्शनशास्त्रियों, समाज शास्त्रियों, राजनीति शास्त्रीयों, अर्थशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों एवं वैज्ञानिकों द्वारा हो रहा है । इस प्रयत्न ने एक नए अनुशासन को जन्म दिया है जिसे शिक्षा शास्त्र कहते हैं शिक्षा शास्त्र में उन सब विचारों एवं प्रयोगों का वर्णन और व्याख्या भी होती है जिन्होंने समय-समय पर शिक्षा प्रक्रिया को प्रभावित किया है । इसके साथ साथ इसमें इस पर भी विचार किया जाता कि बदलते हुए समाज में शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यचार्य और शिक्षण विधियों का क्या स्वरूप होना चाहिए । शिक्षा शास्त्र

में शिक्षा की समस्त समस्याओं पर विचार किया जाता है और उनके समाधान ढूढे जाते हैं । आज शिक्षा शास्त्र का अपना अध्ययन क्षेत्र है और अपनी अध्ययन एवं शोध की विधियां हैं। अब इसे इंटर, बी०ए०, एम्०ए०, बी०एड०,एवम् एम्०एड० स्तर पर एक स्वतंत्र विषय के रूप में पढ़ाया जाता है और विश्वविद्यालयों में उसके लिए अलग से शिक्षा संकायों का गठन किया जाने लगा है। इस विषय को को निम्नलिखित रूप में परिभाषित किया जा सकता है-

शिक्षा शास्त्र ज्ञान की वह शाखा है जिसमें शिक्षा प्रक्रिया के स्वरूप एवं उसके विभिन्न अंगों तथा समस्याओं का दार्शनिक, समाजशास्त्रीय, राजनैतिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अध्ययन किया जाता है।

Area of Study

शिक्षा शास्त्र का अध्ययनक्षेत्र एवं विषय वस्तु

हम लोग प्रायः किसी विषय के अध्ययन क्षेत्र और उसकी विषय वस्तु में भेद नहीं करते परंतु इन दोनों में थोड़ा अंतर है। अध्ययन क्षेत्र का अर्थ उस सीमा से होता है जिस सीमा तक किसी विषय का अध्ययन किया जा सकता है और विषय वस्तु का अर्थ उस सीमा से होता है जिस सीमा तक अध्ययन किया जा चुका होता है।

जहां तक शिक्षा शास्त्र के अध्ययन क्षेत्र की बात है वह बड़ा व्यापक है परंतु इस व्यापक क्षेत्र में हमने अब तक जो कुछ सोचा बिचारा है वह उसकी विषय वस्तु है। शिक्षा शास्त्र के अध्ययन क्षेत्र एवं विषय वस्तु को सामान्यतः निम्नलिखित भागों में बांटा जाता है –

1- शिक्षा दर्शन
2- शैक्षिक समाजशास्त्र
3- शिक्षा मनोविज्ञान
4- शिक्षा का इतिहास
5- तुलनात्मक शिक्षा
6- शैक्षिक समस्याएं
7- शैक्षिक प्रशासन एवं संगठन
8- शिक्षण कला एवं तकनीकी तथा
9- अध्ययन के विशिष्ट क्षेत्र जैसे - शिशु शिक्षा, बाल शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, स्त्री शिक्षा, व्यवसायिक शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, शिक्षक शिक्षा, पुस्तकालय संगठन, शैक्षिक और व्यावसायिक निर्देशन, शिक्षण में श्रव्य दृश्य सामग्री का प्रयोग, शैक्षिक तकनीकी, शैक्षिक नियोजन, शैक्षिक वित्त, शैक्षिक मापन और मूल्यांकन, शैक्षिक सांख्यिकी और शिक्षा में अनुसंधान आदि।